"प्रेम न बाड़ी उपजे" प्रेमकथा का वास्तव चित्रण

गणेश श्रीराम इंगले
शोध छात्र
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय,
छत्रपति संभाजीनगर.
मो.9921319953

साहित्य समाज का दर्पण होता है! साहित्य और समाज परस्परपुरक पहलू होते है! साहित्यकार समाज के हर एक विषय बिंदु को साहित्य में चित्रित करता है! अपने साहित्य में नवीनता लाने की कोशिश करता है! समाज के छोटे छोटे विषय को भी वह गहनता से और गहराई से प्रस्तुत करता है! ऐसे ही एक प्रेमकथा पर आधारित वास्तवता को चित्रित करनेवाला साठोत्तरी कथाकार मिथिलेश्वर का प्रेम न बाड़ी उपजे उपन्यास की प्रस्तुति करना चाहता हूं!

मिथिलेश्वर जी ने हिंदी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है! मिथिलेश्वर के अब तक सात उपन्यास और ग्यारह कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं! लेकिन प्रेम न बाड़ी उपजे यह उपन्यास उच्च कोटि का माना गया है! प्रेम न बाड़ी उपजे प्रेम कथा पर आधारित उपन्यास है! इसमें नारी के प्रेम को अधिक महत्त्व पूर्ण माना गया है! लेखक कहते है "नारी जाति प्रेम को पुरुषोकी अपेक्षा प्रेम को अधिक गहरी जीती है! "१"

समाज में देखी सुनी घटनाओं के अधरपार प्रेम के स्वरूप के अन्वेषण की दृष्टी में लिखा गया उपन्यास है! बहुत चर्चित और विश्वसनीय है! लेखक ने उपन्यास में पूर्वाभास में कहा है "मैने अब तक के जीवन मे कई प्रेमियों को निकट से देखा है और कई दर्जनभर प्रेमियों को जानता भी हू! जो सिर्फ़ दिव्यता मे जलकर अभिनय करते है लेकिन बाद मे उस लड़की को पाने और भोगने के बाद उसके साथ जीवन निर्वाह के नाम पर बहानेबाजी करता है! "२"

प्रेम न बाड़ी उपजे में रूपेश और शकुंतला दो पात्र है! दोनो कॉलेज युवक युवती है! शकुंतला सुंदर, सुशील, तेजस्वी है! शकुंतला को घर से पूरी तरह से आजादी है! रूपेश भी उच्चवर्गीय अभिजात्य परिवार का लडका है! रूपेश बडा नेक और व्यवहार कुशल युवक है! शिक्षा प्राप्त करके आइ ए एस होना चाहता है! कॉलेज मे रूपेश और शकुंतला की दोस्ती प्यार में बदल जाती है! वे गहरी प्यार में डूब जाते है! घरवालों की दोनो पर पाबंदी है! इसकारण दोनो घर से भाग जाते है! मद्रास , मुम्बई, दिल्ली हर जगह

रहने जाते है लेकिन बाहरी दुनिया के कारण उनमें तनाव बढ़ता है! दोनो के प्यार की गहराई कम होने लगती है! एक दिन रूपेश शकुंतला को पत्र लिखकर घर लौटता है! वह कहता है! लिसा (शकुंतला) मै अब घर वापस जा रहा हूं! मैने भरसक कोशिश कि की तुम भी घर वापसी के लिए राजी हो जाओ लेकिन तुम राजी नहीं हुई! या तो तुमने मुझे समझने में भूल की या मैं ही तुझे समझ नहीं सका! खैर समझ लो हमारा संग साथ यही तक था! तुम्हारे इच्छाओं के अनुकूल रहने की मैने पूरी कोशिश की! सबकुछ झेलता, सहता रहा लेकिन अपनी इच्छाओके अनुकूल तुम्हे कभी नहीं पा सका! हम फिर घर जा सकते थे और हमारे घरवाले हमे घर में लेते लेकिन तुम नहीं मानती! इतनी सी बात के लिए महत्वपूर्ण जिंदगी को मै और गारद करने को तैयार नही! अब और सहना, झेलना भी मेरे वश में नही! मुझे माफ करना! "३"

मादक की तरह आकर्षण से तूफान की तरह उमड़नेवाला प्रेम तूफान के गुजर जाने पर जीवन की खुरदरी जमीन पर स्थित होता है तब प्रेमी युगल के वर्गगत गुण दोष और संस्कारगत भिन्नताएं उभरकर सामने आती है!

संदर्भ:

१) प्रेम न बाड़ी उपजे - मिथिलेश्वर प्र १४१

२) प्रेम न बाड़ी उपजे - मिथिलेश्वर पूर्वाभास

३) प्रेम न बाड़ी उपजे - मिथिलेश्वर प्र १७०